

विष्णुप्रमाण<sup>०</sup> (vgl. हृच्छेष) 124, 14. कषायो हृदयं कर्षति 155, 8. हृद-  
याविप्रुद्धि 191, 3. 2, 183, 13. 464, 11. fgg. Sitz von बुद्धि und मनस् 1, 324,  
9. 343, 19. von सन्न, रजस् und तमस् 349, 15. व्यदीर्घतिव हृदयम् MBh.  
3, 2300. नेदानो हृदयं चेन्मे स्फुटिष्यति सकृन्नघा R. GORR. 2, 81, 4 (fer-  
nere Belege s. u. स्फुट 1). द्विधेव हृदयं तस्य दुःखितस्याभवत् MBh. 3,  
2359. उद्देजते मे हृदयम् 2322. उद्दिग्दहृदया R. GORR. 2, 101, 26. बाण-  
भिन्न<sup>०</sup> RAGH. 11, 19. MĀRK. P. 112, 4. VER. in LA. (III) 8, 20. उत्कण्ठो-  
च्छ्वसित<sup>०</sup> MRGH. 98. सुधीश्च हृदये Spr. (II) 5817. निषक्तमिव हृदये VA-  
RĀH. BRH. S. 2, 5. 8, 19. 50, 13. 52, 4. हृदयं मनसः पदम् BHĀG. P. 2, 6, 10.  
PAÑĀT. 208, 21. fgg. तं माणो हृदये (Herzgegend) कृत्वा R. 5, 67, 1. हृद-  
यादवतार्यते हारः Spr. (II) 4011. श्रायाण्डुरस्तनतट 2497. Verz. d. Oxf.  
H. 103, a, 31. 149, b, 34. हृदयानि सतामेव कठिनानि Spr. (II) 7408. श्र-  
यो<sup>०</sup> RAGH. 9, 9. कुसुमकोमल VIKR. 47. नवनीतं हृदयं ब्राह्मणस्य, तत्रि-  
पस्य हृदयं तीक्ष्णधारम् Spr. (II) 3414. कुरु त्वं हृदयं स्थिरम् R. GORR.  
2, 26, 29. श्रात्रं KATHĀS. 22, 65. ऋवद्धृदयं BHĀG. P. 3, 28, 34. श्रस्वस्थ<sup>०</sup> R.  
1, 9, 42. सदय<sup>०</sup> ad MRGH. 113. श्रभिन्न<sup>०</sup> RĪĀ-TAR. 4, 423. (श्राशाब्धः) श्र-  
ङ्गानां सत्यं प्रति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रूपाद्धि MRGH. 10. वासवदत्ता-  
हृत<sup>०</sup> KATHĀS. 11, 83. शोकसंतप्त<sup>०</sup> R. 1, 54, 9. शोकानलदग्ध<sup>०</sup> PRAB. 90, 11.  
ist वृत्तं सर्वदेहिनाम् M. 8, 86. ज्ञानाति नरस्य वृत्तम् Spr. (II) 930. त्रय-  
मपि सदृशं येषो वचनं हृदयं समाचारः 7250. अन्तर्गतमपि व्यक्तमाख्याति  
हृदयं हृदा R. 1, 77, 27. हृदयन्सर्वगात्राणि मनोसि हृदयानि च 4,  
30. हृदयान्याममन्थेव जनस्य गुणवतया 2, 26, 2. मध्यमानेन दुःखेन हृद-  
येन MBh. 1, 6113. स्त्रीणां गृह्णाति हृदयम् Spr. (II) 3204. दुर्गन्ध<sup>०</sup> 751.  
हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मः M. 2, 1. पर्यचित्तपद्धयेन MBh. 3, 2805. मम  
हृदयेन समं संघट्य PAÑĀT. 23, 14. भयं महन्महृदयान्न याति वै R. 2, 69,  
21. अनयो नयसंकाशो हृदयान्नापसर्पति Spr. (II) 4477. MĀRK. P. 16, 21.  
यो यस्य हृदये नास्ति Spr. (II) 2906. विडुषो विद्विषो स्त्रीणां हृदये यो  
न तिष्ठति 6076. अतो ऽन्यथा न मे वासो वर्तते हृदये क्वचित् MBh. 3,  
2602. इदं वचनं को हृदये कुर्यात् R. 2, 21, 7. धानाशो हृदये दधौ KATHĀS.  
19, 39. हृदये निधुङ्क्वु Spr. (II) 6782. <sup>०</sup>निहित MRGH. 78. 85. 97, v. 1.  
हृदयानन्दकर VARĀH. BRH. S. 19, 13. सर्वात्तःपुरवनिताव्यापारं प्रति नि-  
वृत्तहृदयस्य MĀLAY. 35. विपुल<sup>०</sup> (v. 1. für <sup>०</sup>मति) Spr. (II) 6155. अनि-  
त्य<sup>०</sup> (स्त्री) 3204. बद्धहृदयस्तस्मिन्मर्भके BHĀG. P. 6, 1, 25. श्रकर्ण<sup>०</sup> Spr.  
(II) 865. अज्ञानहृदया मूर्खोः im Herzen bergend KATHĀS. 62, 203. कृष्ण<sup>०</sup>  
adj. BHĀG. P. 1, 9, 47. — b) Herz so v. a. das Innere des Körpers: स्वयं  
स यद्मं हृदये नि धत्ते RV. 1, 122, 9. AV. 2, 29, 6. श्रद्धेभ्यो हृदयाय च 6,  
90, 1. पिपासाशुष्क<sup>०</sup> MBh. 3, 10431. das Letzte was vom zerfallenden  
Leib übrig bleibt: स हृदयं भूतो ऽशयत् TBa. 2, 3, 6, 1. Mitte, Centrum  
überh.: हृदये (चन्द्रस्य) लाञ्छनं मृगः HALĀJ. 1, 44. eines Spruchs NRs.  
TĀP. UP. in Ind. St. 9, 91. WEBER, RĀMAT. UP. 303. — c) Inneres, Kern  
einer Sache uneigentlich für das Beste, Liebste, Geheime u. s. w.: der  
Erde VS. 11, 39. AV. 12, 1, 8. 35. des Meeres VS. 15, 63. der Gewäs-  
ser AV. 3, 13, 7. des Agni VS. 18, 55. TBa. 1, 1, 3, 12. des Vishṇu  
TS. 3, 2, 6, 1. der Götter VS. 16, 46. पुत्रो हृदयम् TBa. 2, 2, 7, 4. अज्ञाणो  
हृदयं परम् das grosse Geheimniß des Würfelspiels MBh. 3, 2836. अन्त<sup>०</sup>  
2833. 2837. 3081. fgg. 4, 329. HARIV. 815. VP. 379, N. 9. सकलास्त्रा-  
णाम् MĀRK. P. 63, 27. 29. श्रम्य<sup>०</sup> MBh. 3, 2628. 2834. 2836. 8, 1312.  
BHĀG. P. 11, 20, 21. तत्र<sup>०</sup> MBh. 5, 4574. मोमासा<sup>०</sup> PRAB. 110, 8. सूर्य<sup>०</sup>

Kūrma-P. und Girupa-P. im ÇKDra. unter सूर्य<sup>०</sup>. — d) प्रज्ञापतेहृदयम्  
N. eines Sāman Ind. St. 3, 225, a. — 2) m. scheinbar N. pr. eines Wesens  
im Gefolge Çiva's Vjāpi beim Schol. zu H. 210. es ist aber हृदयेद्वर्तन  
zu lesen. — 3) f. श्रा N. pr. einer Stute: विख्याता हृदया नाम HARIV.  
2105. fg. विज्ञातहृदया die neuere Ausg. — Vgl. तल<sup>०</sup>, हि<sup>०</sup>, प्रज्ञाप-  
ति<sup>०</sup>, प्रति<sup>०</sup>, ब्रह्म<sup>०</sup>, भीरु<sup>०</sup>, यज्ञ<sup>०</sup>, राम<sup>०</sup>, रुद्र<sup>०</sup>, वज्र<sup>०</sup>, वि<sup>०</sup>, स<sup>०</sup>, सु<sup>०</sup>.  
2. हृदय (हृद् + श्रय) adj. in's Herz dringend (so Comm.): सर्वभूत<sup>०</sup>  
BHĀG. P. 1, 2, 2. warum nicht alle Wesen im Herzen tragend?  
हृदयक्लम m. Abspannung —, Schlafheit des Herzens SUÇA. 2, 464,  
17. MĀDH. NID. 83, 5.  
हृदयग्रन्थि m. Herzensknoten so v. a. Alles was das Herz beschwert:  
भिद्यते हृदयग्रन्थिप्रिकृद्यते सर्वसंशयाः BHĀG. P. 1, 2, 21. Vgl. unter ग्र-  
न्थि 1).  
हृदयघाह m. die Entgegnahme des Geheimnisses von (gon.): श्र-  
स्त्रायामस्य सर्वस्य MĀRK. P. 63, 23.  
हृदयप्राक्त्विज् adj. das Herz mit sich fortrettsend, — entzückend: को-  
किल R. 1, 64, 6 (66, 6 GORR.).  
हृदयंगम adj. (f. श्रा) zum Herzen dringend, dem H. zusagend: Per-  
sonen, Reden, Laute, Speisen u. s. w. AK. 1, 1, 5, 19. H. 268. HALĀJ. 1,  
146. MBh. 1, 7560. 4, 380. 8, 2288. HARIV. 5762. R. 1, 11, 20. 2, 39, 32.  
64, 31. R. GORR. 2, 98, 8. 3, 28, 8. RAGH. 19, 13. KUMĀRAS. 2, 16. 4, 24. UR-  
TARAR. 80, 5 (103, 5). RĪĀ-TAR. 1, 22. 3, 158. 5, 79. BHĀG. P. 5, 3, 2. 9,  
20, 11. 10, 62, 16. SARVADARÇANAS. 96, 19. PAÑĀT. 1, 14, 73. कुलटा<sup>०</sup> 87.  
aus dem Herzen kommend, der innersten Ueberzeugung entsprechend  
BHAṬṬ. 6, 108. Davon nom. abstr. <sup>०</sup>ता f. (in der zuerst gegebenen Bed.)  
H. 67.  
हृदयच्छिद्र adj. das Herz durchbohrend: बाण MBh. 5, 7286. वाचः  
R. GORR. 2, 17, 30. 33. 5, 37, 10.  
हृदयर्ष<sup>०</sup> adj. 1) zum Innern gehörig, dem I. entsprechend TBa. 3, 11, 8,  
7. — 2) aus dem Herzen geboren, m. so v. a. Sohn BHĀG. P. 5, 15, 5.  
हृदयज्ञ adj. 1) das Herz kennend so v. a. dem Herzen zusagend KĀND.  
UP. 7, 2, 1 (auch श्र<sup>०</sup>). — 2) das Geheimniß von (geht im comp. voran)  
kennend: अन्त<sup>०</sup> MBh. 3, 2833. 2837. 4, 329. HARIV. 815. VP. 379, N. 9.  
Davon nom. abstr. <sup>०</sup>त्व n. BHĀG. P. 11, 20, 21.  
हृदयदत्त m. N. pr. eines Juristen Verz. d. B. H. No. 1403 (<sup>०</sup>दत्ती!  
nom. die Hdschr.).  
हृदयदाक्त्विन् m. das Herz versengend: शल्यतुल्यो विपाकः (शत्रिभ-  
सक्तानां कर्मणाम्) Spr. (II) 2122. परिकर 4258.  
हृदयदीप m. Titel eines Wörterbuchs des Vopadeva NIGH. PR. <sup>०</sup>क  
Verz. d. B. H. No. 979.  
हृदयदूत m. Herzensbote, Titel eines Gedichts Verz. d. B. H. No. 571.  
हृदयनरपति m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am.  
Or. S. 7, 11, Çl. 41. — Vgl. हृदयेश und हृदयेश्वर.  
हृदयपीडा f. = हृत्पीडा SUÇA. 2, 290, 2; vgl. 1, 332, 1.  
हृदयपुण्डरीक n. = हृत्पङ्कज SARVADARÇANAS. 177, 19.  
हृदयप्रिय adj. herzerquickend: Speise SUÇA. 1, 235, 15.  
हृदयारामदेव m. N. pr. eines Fürsten Notices of Skt Mss. 2, 269.  
हृदयरोग m. = हृद्रोग Herzkrankheit P. 6, 3, 51.